CBSE Test Paper 04
Ch-9 सवैये

1. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**
   कानिनि दै अँगुरी रहिबो जवहीं मुरली धुनि मंद बजैहै।
   मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै।।
   टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।
   माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।।

   i. श्री कृष्ण की अदाएँ गोपी को किस मनोदशा में ले जाती हैं?
   ii. गोपी स्वयं को कब नहीं सँभाल पाती है और क्यों?
   iii. गोपी अपनी बात ब्रज के लोगों को क्यों सुना रही है?

2. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**
   मोरपंखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
   ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी।।
   भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वाँग करौगी।
   या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

   i. उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखें।
   ii. उपर्युक्त काव्यांश का शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
   iii. 'भवतो वोहि मेरो रसखानि सों' काव्यांश में 'रसखानि' किसे कहा गया है?

3. एक लकुटी और कामरिया पर कवि रसखान सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?

4. भाव स्पष्ट कीजिए- कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।

5. श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को अपने वश में किस प्रकार कर रखा था?

6. रसखान ब्रजभूमि और कृष्ण से जुड़ी वस्तुओं से बहुत प्यार करते हैं, स्पष्ट कीजिए।

CBSE Test Paper 04
Ch-9 सवैये

Answer

1. i. श्री कृष्ण जब मधुर स्वर में मुरली बजाते हैं और अटारी पर मधुर स्वर में गोधन गाते हैं, तब गोपी उन्हें सुनकर विवश हो जाती है और अनायास ही कृष्ण की ओर खिंची चली आती है। श्री कृष्ण की मादक तथा मोहक मुसकान देख गोपी का अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रह जाता है।
   ii. श्रीकृष्ण का मधुर गायन और उनकी मुरली की सुरीली तान को सुनकर गोपी स्वयं को सँभाले रखती है, परंतु उनका मोहक मुसकानयुक्त चेहरा देख वह स्वयं को सँभाल नहीं पाती है, क्योंकि वह श्रीकृष्ण की मुस्कान की दीवानी है।
   iii. ब्रज में रहने के कारण गोपी को ब्रजवालों से लोक-लाज का भय था। किंतु कृष्ण की मुसकान देखकर वह खुद को सम्भाल नहीं पाती। स्वयं को न सम्भाल पाने के कारण वे लोक-लाज की मर्यादा की परवाह नहीं करती और कृष्ण की तरफ खिंची चली जाती है। अपनी इसी असमर्थता को गोपी ब्रजवासियों के समक्ष प्रकट कर रही है।
2. i. उपर्युक्त काव्यांश में कृष्ण के सौन्दर्य पर मुग्ध गोपियों की उस मनोदशा का वर्णन है जिसमें वह कृष्ण के समान ही रूप धारण करना चाहती है | इसमें एक गोपी दूसरी से कहती है कि हे सखी! मैं कृष्ण के समान ही अपने सर पर मोर के पंखों का मुकुट तथा गले में गुंज की माला पहनूँगी। मैं पीले वस्त्र धारण करूँगी तथा उन्हीं की तरह गोधन गाते हुए गायों के पीछे लाठी लेकर वन-वन घूमूँगी। मेरे कृष्ण को जो भी अच्छा लगता है मैं वो सब कुछ करने को तैयार हूँ। पर हे सखी! कृष्ण की उस मुरली को मैं कभी अपने होठों पर नहीं रखूँगी क्योंकि उसी मुरली ने श्रीकृष्ण को हमसे दूर किया है।
   ii. उपर्युक्त काव्यांश का शिल्प सौन्दर्य निम्नलिखित है-
      - श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन है।
      - इसमें कवि ने श्रीकृष्ण के सौंदर्य से मोहित गोपियों की उस मुग्धता का चित्रण किया है जिसमें वे स्वयं कृष्ण का रूप धारण कर उनके समान ही बनना चाहती है।
      - काव्यांश में ब्रजभाषा का प्रयोग है
      - काव्य की भाषा में लयात्मकता तथा संगीतात्मकता है।
      - काव्यांश सवैया छंद में रचित है |
      - इस काव्यांश में अनुप्रास अलंकार की अनुपम छटा दर्शनीय है।
      - अंतिम पंक्ति में यमक अलंकार है |
   1. 'भावतो वोहि मेरो रसखानि सों' में रसखानि श्रीकृष्ण को कहा गया है ।
3. कवि श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त है। वह कृष्ण की हर वस्तु से प्रेम करता है। श्रीकृष्ण गायों को चराते समय यह लकुटी और कामरिया (कंबल) अपने साथ रखते थे। यह लकुटी और कामरिया कोई साधारण वस्तु न होकर कृष्ण से संबंधित वस्तुएँ थीं, इसलिए कवि उन पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार है।

4. **भाव-** इस पंक्ति में कवि रसखान का श्रीकृष्ण से जुड़ी वस्तुओं के माध्यम से उनके प्रति अनन्य प्रेम प्रकट हुआ है। श्रीकृष्ण गोपियों के साथ इन करील के कुंजों की छाँव रास-लीला रचाया करते थे। कवि के लिए इन करील कुंजों का अत्यधिक महत्त्व है। वह इन कुंजों को सैकड़ों स्वर्ण-भवनों से भी ज्यादा प्रिय एवं कीमती मानता है।

5. श्रीकृष्ण का रूप अत्यंत मोहक है। उनकी मधुर मुस्कान एक ओर जहाँ उनकी सुंदरता को और बढ़ाती है वहीं दूसरी ओर ब्रजवासियों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इसके अलावा उनकी मुरली की मधुर तान तथा उनका गोधन गायन लोगों पर जादू-सा असर करता है। इस तरह कृष्ण ने ब्रजवासियों को अपने वश में कर रखा था।

6. कवि रसखान ब्रजभूमि पर ही बार-बार जन्म लेना चाहते हैं। वे अगले जन्म में चाहे मनुष्य बने, पक्षी बनें या पत्थर, वे ब्रज में ही जन्म लेने की अभिलाषा रखते हैं। श्रीकृष्ण ने जिस बाग, बगीचों और तालाबों के आसपास अपनी गाएँ चराई थीं, उनको निहारते रहना चाहते हैं। वे नंदबाबा की गायों को चराने के बदले आठों सिद्धियों और नवों निधियों के सुख भूलना चाहते हैं तथा करील के कुंजों से जुड़ी वस्तुओं से बहुत प्यार करते हैं।